खण्ड - क

प्र-1
उत्तर-1

(क) शीर्षक => "हँसी - खुशी का नाम जीवन है।"

(ख) हँसी अर्थात आनन्द एक ऐसे प्रबल इंजन के समान है जो शोक और दुख की दीवारों को ढा सकने में दक्ष है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उत्तम सुअवसर की हँसी उदास-से उदास मनुष्य के चित्त को प्रफुल्लित कर देती है।

(ग) सदा अपने कर्मों पर खीझने वाला - हैरीक्लेस बहुत कम जिया परन्तु अतीव प्रसन्न मन वाला व्यक्ति - डेमाक्रीटस कुल 109 वर्ष तक जिया। प्रस्तुत उदाहरण से लेखक बताना चाहते हैं कि हम जितना अधिक आनंद से हँसेंगे, जितने प्रसन्न रहेंगे उतनी ही हमारी आयु बढ़ेगी।

(घ) हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न है। जब भी हमारा अन्तरमन खुश होता है, तब हमारे चेहरे पर एक प्यारी-सी मुसकान खिल उठती है। हँसी हमारे भीतर की प्रसन्नता को प्रत्यक्ष रूप से प्रकट करती है। इस प्रकार हँसी हमारे भीतरी आनंद को सहजता से प्रकट करती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ङ) पुराने लोग अर्थात हमारे पूर्वज कह गए हैं कि हँसो और पेट फुलाओ। उनका मानना था कि हँसी सभी कला-कौशलों से भली है। हँसी में एक उदास-से उदास मनुष्य को प्रफुल्लित करने की शक्ति है। जितना ही अधिक हम हँसेंगे उतनी ही हमारी आयु दीर्घ होगी। हँसी-खुशी का नाम ही जीवन है। इसलिए पुराने लोग हँसी को विशेष महत्व देते थे।

2

प्रश्न-2 अपठित काव्यांश

उत्तर-2

6

(क) जो महापुरुष अपना सारा जीवन विश्व-कल्याण के लिए समर्पित कर देते हैं, अपने तेज से विश्व को आलोकित करते हैं, यहाँ तक कि अपने प्राण अपना सर्वस्व, सब कुछ न्योछावर परहित के लिए न्योछावर कर देते हैं, वह उन्हें सदियों तक याद किया जाता है, वे मरकर भी लोगों की स्मृतियों में जीते हैं। ऐसे ही सज्जनों के समान मरकर भी सदियों तक जीना संभव है।

2

(ख) यहाँ कवि उन महान लोगों की बात कर रहे हैं जो इस विश्व के लिए कल्याण के लिए हर सम्भव प्रयास करते हैं। ऐसे लोग इस जग के हित के लिए श्रेयस्कर कार्य करते हैं, सबकी पीड़ा हरते हैं पर स्वयं

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

के लिए कुछ इच्छा नहीं रखते। वे स्वयं कष्ट सहते हैं, सारी यांत्रणाओं एवं मुसीबतों का सामना करते हैं पर वसुधा पर कोई संकट नहीं आने देते। वे स्वयं को जलाकर, पूरे विश्व में रोशनी फैलाते हैं।

(ग) कवि नवयुवकों से अपेक्षा करता है कि वे भी इस युग को नूतन स्वर प्रदान करेंगे, इस भूतल पर नया इतिहास रच सकेंगे। नवयुवक ऊँच-नीच, जाति-रंग का भेदभाव नहीं करेंगे एवं रूढ़िवादों का परिष्कार करेंगे। कवि उनसे अपेक्षा करता है कि वे जग-कल्याण के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने में संकोच न करेंगे।

खण्ड - ख

प्रश्न-3

(क) जब वामीरो ने तताँरा को देखा तब वह फूट-फूट कर रोने लगी।

(ख) तताँरा की ~~आँखें~~ इसलिए ~~व्याकुल थी क्योंकि वे वामीरो को ढूँढने में व्यस्त थी।~~

(ग) जापान की ~~स~~ में चाय पीने की एक विधि को चा-नो-यू कहते हैं।

* (ख) भाग में क्योंकि के स्थान पर 'और' का प्रयोग भी संभव है:
तताँरा की आँखें व्याकुल थी और वामीरो को ढूँढने में व्यस्त थी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न-4 (क)

समासिक पद	विग्रह	समास का नाम
(क) जनांदोलन	जन का आंदोलन	तत्पुरुष समास
नीलकमल	नीला है जो कमल	कर्मधारय समास
(ख) नवनिधि	नौ निधियों का समाहार	द्विगु समास
यथासमय	समय के अनुसार (उचित समय)	अव्ययीभाव समास

2018

प्रश्न-5

उत्तर-5 जब शब्द विभक्तियों से युक्त होकर वाक्य में प्रयोग किया जाता है तब वह पद कहलाता है। पद भाषा की बद्ध इकाई है जो कोश में नहीं होती।

उदाहरण - 'लड़का' यह एक शब्द है।

- 'लड़का खेल रहा है।' → इस वाक्य में (लड़का) शब्द को वाक्य में प्रयोग होने के कारण, वह पद कहलाता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न-6

उत्तर-6

(क) मौत सिर पर होना : जान खतरे में होना।
राजू के सामने जंगल में सहसा एक साँप आ गया है उसे प्रतीत हुआ कि मौत उसके सिर पर है।

(ख) चेहरा मुरझा जाना : निराश व उदास होना
यह ज्ञात होने पर कि वह परीक्षा में फेल हो गया है, उसका चेहरा मुरझा गया और वह रोने लगा।

प्रश्न-7

उत्तर-7

(क) माताजी बाज़ार गई हैं।
(ख) वह गुनगुने पानी से स्नान करता है।
(ग) मैं अपना काम कर लूँगा।
(घ) अपराधी को मृत्युदण्ड मिलना चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

खण्ड-ग

प्रश्न-8 इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला - - - -

उत्तर- लेखक मासूम रज़ा द्वारा लिखित पाठ - टोपी शुक्ला में मज़हब की सारी दीवारों को पार किया गया है। इफ़्फ़न एक कट्टर मुसलमान-परिवार का सदस्य था तो टोपी शुक्ला एक कट्टर हिंदु कुटुम्ब का। पर उनकी घनिष्ठ मित्रता में मज़हब की कोई दीवार नहीं थी। टोपी अकसर इफ़्फ़न के घर जाकर उसकी दादी से खूब स्नेहपूर्वक बातें किया करता था। उनके बीच परस्पर प्रेम, सद्भावना एवं स्नेह की अदृश्य डोर थी। दोनों मित्र सदा मिल-जुलकर प्रसन्नता से, बिना किसी लड़ाई-झगड़े के रहते थे।

आज समाज को ऐसे ही शाश्वत संबंधों की आवश्यकता है। धर्म के नाम पर कोई भेद-भाव न हो, हम सब परस्पर प्यार से एवं एक दूसरे का साथ देते हुए रहें। आखिर हम सब उस निराकार ईश्वर की संताने हैं, हम सब एक ही हैं बस हमारे रीति-रिवाज थोड़े भिन्न हैं पर हैं तो हम सब एक ही कुटुम्ब- एक ही वसुधा का हिस्सा! यह पाठ उन सबके लिए प्रेरणादायक है जो हिंदु-मुस्लिम में ज़हर घोल उनके दंगे करवाते हैं। आज एक ऐसे समाज की आवश्यकता है जहाँ अनेकता में भी एकता हो, सारे एक-जुट होकर रहें ताकि कोई बाहरी सत्ता हमारे ऊपर राज न कर सकें। एकता से ही हमारे देश की प्रगति सम्भव है।

201

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

5

प्रश्न-1 मनुष्यता का प्रतिपाद्य।

उत्तर-1 मनुष्यता

मनुष्यता अर्थात वह गुण जो एक मानव को सच्चा मनुष्य बनाते हैं। कवि इस कविता के द्वारा एक सच्चे मनुष्य के गुणों का उल्लेख कर रहा है। उसके अनुसार एक सच्चा मनुष्य वही है जो आत्मकेंद्रित न होकर परहित का कल्याण करे। जो लोग स्वार्थी हैं, केवल अपना हित चाहते हैं उनमें मनुष्यता जैसी प्रवित्ति भावना का अंश नहीं हैं। कवि ने राजा रंतिदेव, दधीचि, राजा उशीनर एवं कर्ण जैसे महादानियों का उदाहरण देकर मनुष्यों को बेझिझक दान करने के लिए प्रेरित किया है। महात्मा बुद्ध के समान स्नेहपूर्वक सारी कुप्रथाओं का अंत करने की ओर संकेत किया हैं।

एक सच्चा मानव वही है जो सब कुछ पाने के बाद भी घमंड न करें और सदैव न्याय एवं सच्चाई के पथ पर अडिग रहे। हमें अकेले ही नहीं अपितु सबको साथ लेकर चलना है, केवल अपना ही कल्याण नहीं अपितु परार्थ के कल्याण एवं सुख की भी कामना करनी है। अपने बाग रूपी मन को प्रेम, सद्भावना, सच्चाई एवं दया जैसे गुणों से सींचना है। एक सच्चा मनुष्य किसी भी विपत्ती में घबराता नहीं। वह परहित के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तत्पर रहता है। वह अपनी ही नहीं सबकी उन्नति का बीड़ा उठाता हैं। जिस मनुष्य में ये सब मूल्य हैं वही एक सच्चा भला मानस है जिसमें मनुष्यता है पशु-वृत्ति नहीं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न-10

(क) ख्यूकिन वह व्यक्ति था जो चौराहे पर खड़ा होकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था। वह यह दावा कर रहा था कि एक पिल्ले ने उसकी अँगुली ~~खाह~~ काट खाई है जिसके कारण वह एक सप्ताह तक काम नहीं कर पाएगा ~~एक~~ हर्जाने एवं कुत्ते के मालिक से हर्जाने की माँग कर रहा था। वह ~~भी~~ भीड़ इकट्ठा करने के लिए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा।

(ख) हाँ, यह कथन उचित है। अगर ~~रूढ़~~ रूढ़ियाँ अर्थात् परंपराएँ बोझ या बंधन बनने लगे तो उनका टूट जाना ही श्रेयस्कर है। समय के साथ परिवर्तन आवश्यक है। जो प्रथाएँ ~~बाधा~~ उन्नति में बाधा बनती हैं उनका त्याग करना समाज के हित में है। जिस प्रकार ततांरा-वामीरो कथा में उन दो युगल की मृत्यु एक कुप्रथा के कारण हुई। ऐसी रूढ़ियों का टूटना सुखद परिणाम के लिए होता है।

(ग) आज कल की फिल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन 'ग्लोरिफाई' किया जाता है। दुख का ऐसा विभत्स रूप दिखाया जाता है जो असल-ज़िंदगी से पर होता है। ऐसे दर्शकों का भावुक रूप से शोषण होता है। 'ग्लोरिफाई' करने का मुख्य कारण ज़्यादा लोगों को फिल्म देखने के लिए आकर्षित करना होता है ताकि ज़्यादा कमाई हो सके। ऐसी फिल्में असल ज़िंदगी से कोसों दूर होती हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न-11 अब कहाँ दूसरे के दुख - - - -

(5)

उत्तर- बढ़ती हुई आबादी के साथ-साथ मनुष्यों की इच्छाएँ एवं आवश्यकताएँ भी बढ़ती जा रही हैं। अपने आवास बनाने के लिए उसने पेड़ों को काटना शुरू कर दिया है। घने जंगलों के स्थान पर अब ऊँची-ऊँची इमारतें होती हैं। इतना ही नहीं उसने समुद्र को भी पीछे दखेल उसकी भी जमीन हड़पने की चेष्टा की है। प्रदूषण एवं बारूद की लीलाओं ने अनगिनत रोगों को जन्म दिया है जिससे आज मनुष्य जूझ रहे हैं। पक्षियों से उनके घर छीने गए हैं जिस कारण वे यहाँ वहाँ भटकते रहते हैं। मानव ने इतने आविष्कार किए पर वह प्रकृति का आदर-सत्कार करना भूल गया।

इन कुकर्मों का कुपरिणाम यह है कि आज प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है। गर्मी में बहुत गर्मी, ~~बिन~~ बेमौसम की बरसात, जलज़ले, सैलाब आदि आते हैं। पर अभी भी समय है। (देर सही अंधेर नहीं।) मानव को अब यह समझना होगा कि यह वसुधा केवल उसकी जागीर नहीं है, पृथ्वी पर बाकी पशु-पक्षी एवं अन्य प्राणियों का उतना ही अधिकार है जितना मानव का। इसका समाधान है वृक्षारोपण। यह सबसे सरल एवं प्रभावशाली उपाय है जिससे प्रकृति का संतुलन पुनः ठीक हो जाएगा। प्लास्टिकादि के प्रयोग के स्थान पर कपड़े के थैलों का प्रयोग करना, प्रदूषण करने वाले पदार्थों का उपयोग कम-से कम करना। हमारी वसुधा को स्वच्छ एवं संतुलित करने का बीड़ा अब हमें ही उठाना है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न-12

(क) तपोबन अर्थात् जहाँ तपस्वी तपस्या करते हैं। बिहारी जी ने इस जगत को तपोबन कहा है क्योंकि इस जग में अतीव गर्मी के कारण दुश्मन भी एक साथ रह कर इस गर्मी से अपनी रक्षा करने के लिए प्रयासरत हैं। यहाँ भी प्राणी गर्मी से बचने के लिए कठोर तपस्या कर रहे हैं इसलिए यह जगत एक तपोबन है।

(ख) 'दीपक' कवयित्री के मन की आस्था का प्रतीक है और 'प्रियतम' कवयित्री के आराध्य परमात्मा का प्रतीक है। कवयित्री अपने आस्था रूपी दीपक को सदैव प्रज्वलित रहने को कह रही है ताकि परमात्मा अर्थात् प्रियतम के समीप जाने का पथ हमेशा आलोकित रहे।

(ग) मेखलाकार पर्वत अर्थात् पर्वत करधनी के आकार का है जिसके चरणों में एक पारदर्शी दर्पण रूपी ताल है। पर्वत अपना महाकार प्रतिबिम्ब ताल में निहारते हुए अपने सहस्र दृग रूपी सुमनों से निहारकर अचम्भित हो रहा है। मोती की मालाओं के समान सुंदर झरने कल-कल की ध्वनि कर पर्वत के गुणगान गाते हुए प्रतीत होते हैं। वर्षा होने पर पर्वत बादलों से घिर जाता है तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे पंख लगाकर उड़ गया हो, शाल के वृक्ष ज़मीन में धसे से प्रतीत होते हैं। पर्वत प्रदेश में पावस ऋतु का दृश्य अत्यंत रमणीय होता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न -13 विज्ञापन (4½) खण्ड-घ

रंगो की दुनिया में स्वागत है आपका ....

विलक्षण चित्र प्रदर्शनी

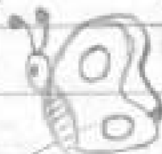

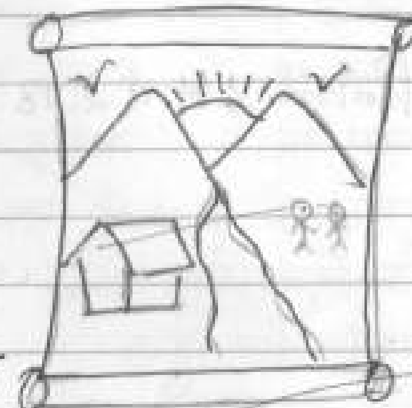

स्थान: केशव महाविद्यालय, कनॉट प्लेस दिल्ली

छात्रों की विलक्षण प्रतिभा का अदभुत प्रदर्शन!

आईए आईए उनका मनोबल बढ़ाइए

अपने सदन को विशेष चित्रकला से अलंकृत कीजिए

16 मार्च 2018 (सुबह 9 बजे से शाम 7 बजे तक)

पहले 7 ग्राहकों के लिए 25% छूट

₹1000 से शुरू ....

मोब: 9512000152

शर्तें लागू

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न-14 विद्यालय की सांस्कृतिक संस्था - - -

5

क. ख. ग. विद्यालय, रोहिणी दिल्ली

दिनांक - 6 मार्च 2018

कक्षा VI - XII छात्रों हेतु

सूचना

'स्वरपरीक्षा' समारोह

कक्षा VI से XII के सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि हमारे विद्यालय में रंगमंच सांस्कृतिक संस्था की ओर से स्वरपरीक्षा समारोह 16 मार्च 2018 को विद्यालय के परांगण में आयोजित किया जा रहा हैं। इच्छुक विद्यार्थी कल सुबह ~~8 बजे निर्धारित दिन को~~ अपनी कक्षा अध्यापिकाओं को अपना नाम दें तथा 16 मार्च को ~~8~~ सुबह 8 बजे विद्यालय के परांगण में एकत्रित हों। विजेताओं के लिए विशेष पुरस्कार हैं। अधिक जानकारी के लिए निम्न से ~~सम्व~~ सम्पर्क करें।

लतिका।
सचिव, रंगमंच सांस्कृतिक संस्था

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न-16 अनुच्छेद

5

मन के हारे हार है मन के जीते जीत

संघर्ष जिंदगी का पर्याय है। सबके जीवन में अनेक कठिनाइयाँ बाधा बनकर खड़ी होती हैं जिन्हें हमें अपनी मेहनत, लगन एवं साहस से पार कर सकते हैं। हम सब को कभी न कभी त्रासद परिस्थितियों की दरिया में बहना पड़ता है पर तट पर वही पहुँचते हैं जो अपने मन को मजबूत कर ~~बेतहाश~~ बेतहाशा परिश्रम करते हैं, कभी घुटने नहीं टेकते, हताश नहीं होते। बस आगे बढ़ते ही जाते हैं। जबतक हमारा मन हार न माने तब तक हमारा शरीर भी हार नहीं मानता। निराश होकर रुदन करना विलाप करना व्यर्थ है, आवश्यकता है अपना दृष्टिकोण बदलने की। अगर मन में आस्था और लगन हो तो पहाड़ों को भी हिलाया जा सकता है। हमें अपनी सोच को सदैव सकारात्मक रखते हुए इस विश्व ~~के~~ ~~लिए~~ में एक नया इतिहास रचना है। हमारा मन ही तो है जो हम पर राज करता है। यदि यह सदैव सकारात्मक एवं साहसी रहेगा तो हमे चरमोत्कर्ष का आनंद चखाएगा परंतु यदि यह हार मान कर मुरझा गया तो वहीं हमारा जीवन व्यर्थ हो जाएगा। मसलन एक युवती की टाँगे टूट गई थी पर उसने हार नहीं मानी, वही महिला अपनी एक टाँग के सहारे एवरेस्ट के शिखर पर पहुँची और भारत का झंडा लहराया। ऐसा ही साहसी मन हो तो ज़िंदगी में कोई भी काम मुश्किल नहीं। इसलिए मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न-15 बस में छूट गए सामान - - - - - -

उत्तर -

परीक्षा भवन
क. ख. ग. विद्यालय
रोहिणी दिल्ली
दिनांक - 6 मार्च 2018

सेवा में
श्रीमान परिवहन अध्यक्ष
दिल्ली परिवहन निगम
रोहिणी दिल्ली

विषय: बस कंडक्टर का धन्यवाद एवं पुरस्कृत करने हेतु।

महोदय

सविनय निवेदन यह है कि मैं रोहिणी क्षेत्र की निवासी हूं। गत सोमवार को पिछले सप्ताह मैं बस में सफर कर रही थी। मैं बस से उतरते समय अपना पर्स बस में ही भूल गई थी जिसमें 5000₹ एवं अन्य मोबाइल मूल्यवान वस्तुएं थी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अगले दिन मेरे घर आकर ~~जब मैं रह उसी बस में गई~~ तब बस कंडक्टर श्री रामगोपाल जी ने बड़े ही विनम्रता से मुझे मेरा मूल्यवान सामान लौटाकर अपनी ईमानदारी का परिचय दिया।

मैं आपसे अनुरोध करती हूँ कि आप उनकी सज्जनता के लिए उन्हें यथोचित पुरस्कृत करें ताकि बाकी कर्मचारी भी उनसे प्रेरणा लें। आशा है आप मेरी विनय स्वीकार करेंगे। आपकी बड़ी कृपा होगी।

सधन्यवाद
भवदीय
क. ख. ग.
रोहिणी क्षेत्र की निवासी

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न-17 विद्यालय में मोबाइल

अभिभावक (राहुल विद्यार्थी के पिता) उसकी कक्षा अध्यापिका से मिलने आते हैं।

अध्यापिका: नमस्कार जी (हाथ जोड़कर)

अभिभावक: नमस्कार अध्यापिका जी! मैं राहुल का पिता हूँ और उसकी पढ़ाई के विषय में आपसे बात करने आया हूँ।

अध्यापिका: (मायूस होकर) जी वह पढ़ाई पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहा है। उसका वार्षिक परीक्षा में प्रदर्शन अच्छा नहीं था। आखिर वह घर पर क्या करता है?

अभिभावक: क्या बताऊँ अध्यापिका जी, हरदम मोबाइल में ही लगा रहता है। कभी फेसबुक, वॉट्स एप तो कभी विडियो-गेम्स खेलता रहता है।

अध्यापिका: फिर आप उसे समझाते क्यों नहीं?

अभिभावक: बहुत समझाया अध्यापिका जी, पर वह तो उल्टा मुझे ही कोसता है। कहता है कि "आप भी तो मोबाइल का उपयोग करते हैं, मैं भी करूँगा।"

अध्यापिका: इसका एक ही उपाय है। आप राहुल के सामने मोबाइल का उपयोग न करें। उसको प्यार से समझाइए कि जो कुछ आप कह रहे हैं वह उसके भले के लिए है। केवल ~~आधे~~ 10-15 मिनट के लिए उसे मोबाइल दीजिए, फिर ले लीजिए। तभी वह अनुशासित हो पाएगा।

अभिभावक: आप सही फरमाती हैं अध्यापिका जी! मैं ऐसा ही करूँगा। धन्यवाद।

अभिभावक अपने घर चले जाते हैं।

5

8½/80 alright only

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in